दे रखी है। मुद्रा-पूर्ति को नियंत्रित करने, व्यय में मितव्ययिता बरतने, शीघ्र प्रभावित होने वाली वस्तुओं के आपूर्ति और मांग प्रबंध को सुनिश्चित करने के कदम उठाए गए हैं। केन्द्रीय सरकार ने राज्य सरकारों/संघ राज्य-क्षेत्र प्रशासनों को, जो सार्वजनिक वितरण प्रणाली को मूलत: लागू करते हैं, समय-समय पर अन्य बातों के साथ यह सलाह दी है कि वे उन क्षेत्रों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के बिक्री केन्द्र खोलकर सार्वजनिक वितरण प्रणाली को मजबूत और सुप्रवाही बनायें जहां अब तक ऐसे केन्द्र नहीं हैं अथवा कम संख्या में है; सम्पूर्ण आबादी को राशन कार्ड जारी करें तथा अपनी तरफ से आम खपत की और वस्तुएं इसके द्वारा वितरित करें।

उर्वरकों का उपयोग

393. **श्री राम जेठमलानी :**
सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में कृषि-उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ उर्वरकों के उपयोग में भी वृद्धि हो रही है;

(ख) यदि हां, तो 1991-92 के वर्ष के दौरान देश में उर्वरकों की अनुमानित आवश्यकता कितनी होगी और इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए देश में उर्वरकों का कितनी मात्रा में उत्पादन किया जा रहा है; और

(ग) उर्वरकों की शेष मात्रा के आयात के लिए सरकार द्वारा क्या व्यवस्था की गई है और चालू वर्ष के दौरान उर्वरकों का कितनी मात्रा में आयात किए जाने का विचार है?

रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री चिंता मोहन) : (क) जी, हां।

(ख) 1991-92 में कुछ अनुमानों पर आधारित उर्वरकों के उत्पादन और खपत का आकलन निम्नानुसार है :

(आंकड़े लाख मी. टन में)

	एन	पी	के	योग
खपत . .	84.44	36.47	14.35	135.26
उत्पादन . .	72.00	22.00	—	94.00

(ग) उर्वरकों की आवश्यकता को वर्ष के प्रारंभ में प्रयोग में नहीं लाये गये अवशेष भंडार और स्वदेशी उत्पादन तथा आयातों द्वारा पूरा किया जाता है। पोटैशिक और गैर-पोटैशिक उर्वरकों के आयात के लिए व्यवस्था शुरू कर दी गयी है। एम.एम.टी.सी. ने जोकि इस उद्देश्य के लिए सरणीबद्ध अभिकरण है, आयात के लिए ठेकों को अंतिम रूप देना आरंभ कर दिया है।

पूरे वर्ष के दौरान आयात किये जाने वाले उर्वरकों की यथार्थ मात्रा अभी पूर्णत: निश्चित नहीं की गयी है।

भारतीय उर्वरक निगम को हुआ घाटा

394. **श्री राम जेठमलानी :**
सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि 1990-91 के वर्ष के दौरान भारतीय उर्वरक निगम को कुल 200 करोड़ रुपये का घाटा हुआ है;